P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-8* April- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कोसल की राजनीतिक आध्यात्मिकता : प्राचीन भारतीय राजनीतिक संरचना के लिए एक रोल मॉडल

Political Spirituality of Kosal:A Role Model forAncient Indian Political Structure

Date of Paper Submission: 20/04/2020, Acceptance Date: 25/04/2020, Publication Date: 30/04/2020

सतीश कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक,
विभागाध्यक्ष,
प्राचीन इतिहास विभाग,
एस.टी.डी. महाविद्यालय,
कडीपुर, सुल्तानपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्राचीन काल से ही भारत में राजनीति का सम्बन्ध धर्म से माना जाता है। धर्म और राजनीति दोनो अभिन्न रहे है। इसे संयुक्त रूप से राज धर्म के नाम से अभिहित किया गया है। अर्थात जो अपेक्षा धर्म से की जाती है। वही अपेक्षा राजनीति से है, उससे कम कदापि नही धर्म का सम्बन्ध व्यष्टिगत कल्याण से है, जबकि राजनीति का सम्बन्ध समष्टिगत कल्याण से है। धर्म का मूल आधार जिस प्रकार आध्यात्मिकता से है, वैसे ही राजीनिति का सम्बन्ध आध्यात्मिकता से है। आधुनिक राजनीतिक शास्त्री राजनीति की नैतिकता के नाम से इसी अध्यात्मिकता को व्यक्त करते है। भारतीय इतिहास पुराण इस प्रकार के उदाहरणो से भरा पड़ा है। इन सब में कोशल का राजनीतिक आदर्श सर्व अनुकरणीय है। इसकी राजनीतिक आध्यात्मिकता प्राकारांतर से सम्पूर्ण भारतीय इतिहास को युगो–युगो तक अनुप्रमाणित करती रही है।

SinceAncient times, politics in India is considered to be related to religion. Both religionAnd politics have been integral. It is jointly namedAs Raj Dharma. That is, what is expected from religion. The same expectation is from politics, less than that religion is related to individual welfare, whereas politics is related to collective welfare. JustAs the basic basis of religion is spirituality, Rajiniti is related to spirituality. Modern political scribes express this spirituality in the name of politics ethics. The Indian History Purana is full of such examples. InAll this, the political ideal of Kosala is exemplary. Its political spirituality hasAttested the entire Indian history from time to time.

मुख्य शब्द : राजनीतिक आध्यात्मिकता, जनपद, आत्मिक लगाव, राजसंवर्ग, चक्रवर्ती, प्रभुसत्ता।

Keywords: Political Spirituality, District, SpiritualAttachment, Royalty, Chakravarti, Sovereignty.

प्रस्तावना

अपने व्यापक अर्थों में राजनीति सामान्य लोगों के कल्याण के लिए सामान्य लोगों की चर्चा है। इसीलिए राजनीति को जन, जनपद एवं संस्कृति के त्रिकोण का रूप माना जाता है। राजनीति का केन्द्रबिन्दु जन और उसकी संस्कृति है तथा राजनीति का फलक जनपद पर विस्तारित होता है। इसलिए जनपद के आधार पर राजनीतिक विकास का अध्ययन करना इतिहास अध्ययन की एक प्रमुख मांग है। राजनीतिक का स्वरूप समय–समय पर अपने विविध स्वरूपों में व्यक्त होता रहा है। प्राचीन भारत की सामाजिक, धार्मिक दशा के अनुरूप ही इसकी राजनीतिक व्यवस्था भी एक आध्यात्मिक स्वरूप में परिवर्तित होने लगी। राजनीतिक, आध्यात्मिकता के अन्तर्गत कई तत्वों को सम्मिलित कर सकते हैं–

1. अपने जनपद/राज्य के प्रति आत्मिक लगाव।
2. उच्च आदर्शो से युक्त राज संवर्ग।
3. प्रजापालन का आत्मिक एवं उच्चादर्श।
4. राज समृद्धि की उत्कंठा।

इसी प्रकार की राजनीतिक आध्यात्मिकता अपने राज्य को एक जीवंतराष्ट्र के रूप में स्थापित करती है। इसी से अनुप्रेरित होकर शासक वर्ग

प्रशासनिक संवर्ग और समस्त जनसमुदाय अपने राष्ट्र की सेवा में तत्पर्य रहते हैं। जनपद की अवधारणा जनसंख्या युक्त प्रदेश से मानी जाती है, अर्थात् जनपद एक स्थायी वसावट को व्यक्त करने वाला शब्द है। जनसंख्या के साथ–साथ जनपद में निश्चित जलवायु और पर्यावरण का सन्निवेश होता है। इस प्रकार जनपद एक निश्चित भौगोलिक परिक्षेत्र होता है, जिसका अपना बसावट प्रारूप और पर्यावरणिक स्वरूप होता है। निश्चित बसावट प्रारूप और पर्यावरणिक स्वरूप के आधार पर जनपद की संस्कृति विकसित होती है तथा इसी आधार पर जनपद की राजनीति संचालित होती है। यद्यपि कोशल नाम से जनपद का उल्लेख सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है, किन्तु किसी भी प्रमाणित स्रोत में कोशल के नाम की व्युत्पति नहीं मिलती है। ब्राह्मण ग्रंथों के पूर्व अथर्ववेद में सर्वप्रथम अयोध्या का उल्लेख मिलता है। इस नगर का उल्लेख एक दार्शनिक, आध्यात्मिक स्वरूप में मिलता है।

अष्टाचक्र नवद्वारा देवानां पूरयोध्या
तस्यां हिरण्यमयः कोशः स्वर्गो ज्योतिष वृतः

अयोध्या देवताओं की नगरी है, जिसमें अष्टचक्र और नवद्वार है। इसमें हिरण्यमय कोश स्वर्गीय ज्योति से आवृत्त है। यह वर्णन भारतीय साहित्य में किसी नगर के दैवीय या आध्यात्मीकरण का प्रथम प्रयास है। इससे आगे बढ़कर अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में अपने जनपद के प्रति अधिक अनुराग और आत्मिक संबंध व्यक्त करने का प्रयास है– ''माता भूमिः पुत्रोऽहम पृथिव्या।'' वास्तव में वैदिक संहिता में भूमि/जनपद के भौतिक स्वरूप को इसी प्रकार आत्मिक स्वरूप में बनाने का प्रयास है। इसी से मनुष्य अपने जनपद के साथ जुड़कर गौरव का अनुभव करता है। इस आत्मिक गौरव के साथ स्वर्णमयी लंका भी तुच्छ हो जाती है। जैसा कि रामायण का कथन है– ''जननी–जन्म भूमिश्च स्वर्गापि गरीयसी'' अर्थात जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी महान है। इसी से जनपद की राजनीतिक संस्कृति एक उच्च आदर्श को प्राप्त करती है तो वह राजनीतिक आध्यात्मिक का रूप धारण कर लेती है और अन्य क्षेत्रो व राज्यों के लिए पथप्रदर्शक की भूमिका निभाने लगती है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में कोशल जपनद की राजनीति आध्यात्मिकता को उसके ऐतिहासिक–पौराणिक संदर्भों में विवेचित करने का लक्ष्य है। इसी के साथ इस ऐतिहासिक तथ्य को भी रेखांकित करने का प्रयत्न है कि किस प्रकार कोशल जनपद की राजनीति प्राचीन भारत की राजनीतिक संरचना के लिए एक आदर्श पथप्रदर्शक की भूमिका निभाई है। इस शोध पत्र में पौराणिक आख्यानो को ऐतिहासिक संदर्भो के आधार पर विवेचित किया गया है। बौद्व और जैन ग्रन्थो की ऐतिहासिक सामग्रियों को पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ सुमेलित करते हुए कोशल जनपद की राजनीति, राज परम्परा उसकी प्रशासनिक संरचना और प्रजा कल्याण की भावना को समष्टि कल्याण के राजनीतिक आदर्श के साथ सुमेलित करते हुए व्याख्या की गई है।

भारत में राजनीति की परम्परा और कोशल

भारत में राजनीति का विकास जन के आधार पर हुआ। ऋग्वेद में सबसे चर्चित राजनीतिक इकाई जन है, जिसका उल्लेख 275 बार हुआ है। इसमें अनु. दुह्य, पुरू, तुर्वुस यदु नाम से प्रचलित पंच जन थे, भरत जन सबसे लोकप्रिय और प्रभावी था। यही जन उत्तर वैदिक काल में जनपद के नाम से स्थापित थे। जन मूलतः क्षत्रिय कवीले थे, जिनका प्रारम्भिक स्वरूप घुमन्तू था। फिर इनका स्वरूप स्थायी हुआ और जनपद के नाम से विख्यात हुए। वास्तव में यह वंश से राज्य में परिवर्तन की ऐतिहासिक घटना है। प्राचीन भारत के अधिकांश जनपद का संबंध इन्हीं वैदिक जन और जनपद से है। कोशल जनपद इन्ही में से एक है।

महाकाव्यों और पुराणों में कोशल जनपद की महत्ता को बड़े ही सारगर्भित रूप से व्यक्त किया गया है। रामायण में कोशल को एक महान जनपद स्वीकार किया गया– ''कोशलो नाम जनपदो स्फीतो महानः।'' कोशल जनपद की राजधानी के लिए अनेक नाम प्रयुक्त होते है– कोशल नगरी, पद्मपुरी विशाखा, अयोध्या, साकेत विनीता, अजोदह आदि। महाभारत में इसकी राजधानी नन्दिनी बताया गया है। महाजनपद काल में कोशल की राजधानी श्रावस्ती थी।

कोशल का राजनीतिक आदर्श प्रायः पौराणिक आख्यानों पर आधारित है। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि ऐतिहासिक आदर्शों का मूल आधार पौराणिक आधारों पर ही आश्रित होता है। स्वयं कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी अनेक पौराणिक प्रसंगों और विचारकों का उल्लेख किया गया है।

पौराणिक परम्परा के अनुसार भारत में राजसत्ता का आरम्भ मनु से माना जाता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार वैवस्वत मनु ने अयोध्या की स्थापना की। जल प्रलय की कहानी इसी मनु के काल की मानी जाती है। पौराणिक परम्परा के अनुसार मनु के आठ पुत्र हुए, इनमें ज्येष्ठ पुत्र का नाम इक्ष्वाकु था। मनु ने अपना राज्य अपने पुत्रों में विभाजित कर दिया। मनु के ज्येष्ठ पुत्र इक्ष्वाकु ने अयोध्या में राज्य स्थापित किया। यहीं से यह वंश इक्ष्वाकु वंश या सूर्य वंश के नाम से प्रचलित हुआ। पुराणों में इक्ष्वाकु वंश के शासकों का उल्लेख मिलता है। कालिदास ने रघुवंश में रघु से अग्निवर्ण तक के शासकों का उल्लेख किया है। इस वंश के प्रमुख शासक निम्न हैं–

1. इक्ष्वाकु
2. ककुत्स्थ
3. श्रावस्त
4. पृथु
5. मान्धता
6. त्रिशंकु
7. हरिश्चन्द्र
8. सगर
9. दिलीप
10. भगीरथ
11. रघु
12. अज
13. दशरथ

14. राम

कोशल की राजपरम्परा का वर्णन जैन और बौद्ध साहित्य में भी मिलता है। जैन परम्परा के अनुसार प्रथम तीर्थंकर आदि नाथ का जन्म स्थान अयोध्या था और वे इक्ष्वाकु वंशीय थे। जैन परम्परा के सभी 24 तीर्थांकर इक्ष्वाकु वंशीय माने गये हैं। 24 तीर्थकरों में पांच तीर्थकरों का जन्म स्थान अयोध्या माना गया है। पालि साहित्य में इक्ष्वाकु को ओक्काक कहा गया है तथा शाक्य, कोलिय, मल्ल आदि गणतंत्रों को इक्ष्वाकु से सम्बंधित माना गया है। दीर्घनिकाय, सुमंगल विलासिनी तथा महावस्तु में इसका वर्णन मिलता है। बुद्धचरित्र में अश्वघोष ने गौतम बुद्ध को इक्ष्वाकु कुल प्रदीप और इक्ष्वाकु कुल चन्द्रमा कहा है।

इस प्रकार पुराण, बौद्ध और जैन व लौकिक सभी प्रकार के साहित्य भारत में शासन प्रणाली का उद्भव केन्द्र कोशल/अयोध्या मानते हैं। इसका सम्बन्ध न केवल उत्तर भारत के राज्यों से है बल्कि दक्षिण के शासक भी अपना मूल अयोध्या से मानते हैं। चालुक्य वंश ने तो अपनी लम्बी वंश परम्परा का आरम्भ अयोध्या से ही माना है। अश्मक राज्य की स्थापना भी कोशल से सम्बन्धित है। चोल शासक भी अपने अभिलेखों में राम का उल्लेख किया। न केवल राजतंत्र बल्कि गणतंत्र शासन प्रणाली भी अपना आरम्भ इक्ष्वाकु वंश से मानती है।

चक्रवर्तिन की परम्परा प्राचीन भारतीय इतिहास की परम्परा में चक्रवर्ति या विश्व विजय की कल्पना एक बड़ा आदर्श रही है। प्रायः सभी शासक चक्रवर्ति सम्राट की इच्छा धारण करते थे। विश्व विजय और चक्रवर्ति की अवधारणा मूलतः कोशल की राजपरम्परा की देन है। मनु, इक्ष्वाकु, दिलीप अज, रघु, दशरथ, राम आदि कोशल के शासकों ने ही चक्रवर्ति की अवधारणा को प्रतिपादित किया। कोशल के शासक मान्धाता के विश्वविजय का वर्णन पुराण और बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। सुमंगलविलासिनी के अनुसार मान्धाता ने चार द्वीपों पर अधिकार कर लिया, तीन द्वीपों के शासक उनकी शरण में आगए। कालिदास ने रघुवंश में रघु की विश्व विजय का आदर्श रूप में वर्णित किया है।

''ग्रहीत प्रतिमुक्तस्य सःधर्म विजयी नृपः'' धर्म विजय का यह आदर्श कोशल की दीर्घ राज परम्परा की प्रमुख देन है। चक्रवर्ति और पृथ्वीपति के आदर्श का कोशल के शासकों का भारतीय इतिहास के लिए प्रमुख पाथेय है।

कोशल में प्रजापालन का आदर्श

कोशल की दीर्घ राजपरम्परा अपनी मानवतावादी प्रजावत्सलता के लिए इतिहास में आदर्श रही है। कोशल केवल एक जनपद ही नही वरन एक चिरविजय राष्ट्र रहा, जिसका प्रभाव अपनी उत्तरजीवित के साथ भारतीय इतिहास का आधार रहा है। कोशल के वंशानुगत शासकों ने राजधर्म का एक अतुल आदर्श स्थापित किया। इसके शासक एक राजऋषि के रूप में स्वयं को प्रतिष्ठापित किये। प्रजा को अपनी संतति के रूप में स्वीकार कर प्रजापालन का एक महान आदर्श प्रस्तुत किया। प्रजा पालन का यह आदर्श भारतीय राजनीतिक प्रणाली का सबसे महान आदर्श है। इसके साथ ही राजा और प्रजा का भूमि के साथ रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हुआ। यह वर्तमान समय के लिए भी अनुकरणीय है।

राजनीति का मानवतावादी स्वरूप

कोशल का राजनीतिक इतिहास मानवतावादी अध्याय का पोषक वना। मनु को मानवता सृजित करने का श्रेय दिया जाता है। दिलीप और रघु का त्याग एक आदर्श के रूप में स्थापित है। राजा पृथु के नाम से ही यह धरती पृथ्वी की संज्ञा से विभूषित है। भगीरथ की यशगाथ गंगा के रूप में अविरल प्रवाहित है। न केवल पौराणिक परम्परा बल्कि जैन और बौद्धों की परम्प्रा में भी कोशल की राजनीतिक परम्परा मानववादी है। प्रथम जैन तीर्थकर ऋषभेदव और उनके पुत्र भरत और वाहुबली का आदर्श कोशल की देन है। शाक्य मुनि गौतम भी कोशलक है।

परिणाम एवं निष्कर्ष

कोशल ने पौराणिक परम्परा की एक ऐसी राजप्रणाली स्थापित की जिसमें, आदर्श की आध्यात्मिकता बसने लगी। राजत्व के कर्म का जो आदर्श कोशल की परम्परा में स्थापित हुई, वही भारतीय मानस में सहज स्वीकार्य हुए, यहाँ राजसत्ता से अधिक प्रभुसत्ता विद्यमान रही। कोशल की राज प्रज्ञा का प्रकाश सदियों से भारतीय राजनीति के आदर्श को आलोकित कर रहा है और राम उसके प्रकाश पुंज है, जिसके आदर्श चरित्र के सम्मुख कोई और नहीं है– नास्ति रामस्य सदृशे विक्रम भूवि कश्चीत।

प्रस्तुत शोधपत्र कोशल में विकसित राजनीतिक आध्यात्मिकता और आदर्श का विश्लेषण कर या प्रदर्शित करने का प्रयत्न करता है कि संपूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास में इसका महत्व बड़ी व्यापकता के साथ विद्यमान रहा। राजनीति के दो परस्पर विरोधी आदर्शों को कोशल ने एक साथ संतुलित किया, यहां चक्रवर्ती की विस्तारवादी योजना भी थी और मातृभूमि के प्रति स्वाभाविक लगाव, जो जनपदों के साथ अपने को दृढ़ता से बांधे रखने में सहायक सिद्ध होती है। इसी के साथ मानव गरिमा का पूरा सम्मान बनाए रखा गया। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी इस राजनीतिक आदर्श को प्रजा के सुख में राजा का सुख मानकर स्वीकार किया गया। शुंग शासकों ने कोशल जनपद और उसके राजनीतिक आदर्श को अधिक निष्ठा के साथ प्रदर्शित किया। अश्वमेध यज्ञ का आयोजन इसी प्रकार का एक उदाहरण है। गुप्त काल में यह राजनीतिक आदर्श और राजनीतिक आध्यात्मिकता अपनी सर्वश्रेष्ठता में स्वीकार हुई। गुप्त शासक जहां एक तरफ अपने को पराक्रमी और दिग्विजय सिद्ध करने का प्रयत्न करते रहे ,व हीं अपनी प्रजा में उच्च कोटि के विद्वान आदर्श न्यायवादी उत्तम कलाकार और महान दानी के रूप में भी स्थापित करने का प्रयत्न किए। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति और एरण अभिलेख में इसका विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। कुमारगुप्त के मंदसौर अभिलेख में भी इसका प्रमाण मिलता है। पूर्व मध्यकाल में पृथ्वी वल्लभ जैसी अनेक उपाधियां शासकों के लिए प्रचलित हुई। यह प्रकारांतर से कोशल की राजनीतिक आध्यात्मिकता की स्वीकृति हुई।इस प्रकार कोशल ने पौराणिक परंपरा की एक ऐसी राज प्रणाली विकसित की, जिसके आदर्श में

आध्यात्मिकता बसने लगी। राजनीतिक आध्यात्मिकता का जो आदर्श कोशल की परंपरा में स्थापित हुआ, वही भारतीय जनमानस में सहजता से स्वीकार्य हुआ। यहां राज्य सत्ता से अधिक प्रभुसत्ता विद्यमान रही। कोशल की राज प्रणाली का यह प्रकाश सदियों से भारतीय राजनीति का आदर्श बना रहा। राम इसके प्रकाश पुंज हैं, जिनके आदर्श चरित्र के सम्मुख कोई और नहीं है – नास्ति रामस्य सदृशे विक्रम भुवि कश्चित।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Basham,A.L.Adbhut Bharat,Agra, 2007*
2. *Davids, Thomas Rhys, Budhist India, 1903*
3. *Jha, D.N.A Marxist View ofAncient Indian History, New Delhi, 1968*
4. *Ghosh,Amalanand. The City in Early Historical India, Shimala, 1973*
5. *Gokhale,Pallavee, Mahajanapadas in Early Historic India, 2nd International Conference on Remote SensingArchaeology, Rome, December, 2006*
6. *Jha, D.N.Ancient India, New Delhi, 1989*
7. *Jha, M.K. Migration, Settlement,And State Formation in the Ganga Plain:A Historical Geographic Perspective, JESHO, 2014*
8. *Kosambi, D.D. Indian History, Bombay, 1985*
9. *Kumari, Tanuja.Agriculture Science-ContinuityAnd Changes From Vedic to Buddhist Period, Dhanbad, 1973*
10. *Kumari, Sabita. Representation of Birth of Buddha in BuddhistArt,Procceding IHC,73rd session*
11. *Law, B.C. Tribes inAncient India, Poona, 1973*
12. *Mishra, V.D. The Early History of Middle Ganga Plain, 2009*
13. *Müller, Max,Ancient Sanskrit Literature, Delhi, 1859*
14. *Pal, J.N., Early Farming Culture of the Middle Ganga Plain, Paper Presented in the International Seminar on the 'First Farmers in Global Perspective', Lucknow, 2006*
15. *Panikkar, K.M.A Survey of Indian History, New Delhi, 1963*
16. *Pathak, Vishudhanand. History of Kosala UP to Rise of Mauryas*
17. *Raychaudhuri, Hemchandra, Political History ofAncient India, 1996*
18. *Raj, Dev, Bhartiya Sanskrit, Lucknow, 1966*
19. *Singh, Satish Kumar, Paddy Culture MakingA New Socio-Economic Structure in Early Indian History, Lecture Presented in IHC, JNU Session,2014*
20. *Singh, Satish Kumar, Model Role of Value Education in emerging in India,Abstract IHC, Gour Banga University,2015*
21. *Tripathi, R.P. History of Kosala*
22. *Thapar, Romila. Cultural Pasts: Essays in Early Indian History, New Delhi, 2013*
23. *Tripathi, V. Growth of Culture of Gangetic Plain, 2009*